प्रेमचंद्रोतर कहानी (1936 से1950)

हिंदी प्रतिष्ठा ।।। प्रोफेसर रौशन कुमार (हिन्दी विभाग)
जनता कोशी महाविद्यालय बिरौल।

सन 1936 से 1950 तक की कहानी को कथा जगत में प्रेमचंदोत्तर कहानी काल के रूप में जाना जाता है। प्रेमचंदोत्तर कहानी किसी एक दिशा की ओर अग्रसर नहीं हुई अपितु विविध देशाओं में उसका विकास हुआ। कहानी इस काल की केंद्रीय विद्या रही है। अतः उसने जीवन और जगत के विविध पक्षों को अपनी परिधि में समेटने का प्रयास किया। इस काल में एक ओर तो प्रगतिवादी विचारधारा से अनुप्राणित कहानीकारों ने प्रगतिवादी कहानियां लिखी तो दूसरी ओर मनोविश्लेषणात्मक कहानीकारों ने ऐसे विषयों पर

कहानियां लिखीं जिनमें व्यक्ति मन की आंतरिक परसों को खोलकर देखा गया था। प्रगतिवादी कथाकारों में प्रमुख है यशपाल, जिन्होंने मार्क्सवादी चेतना से अनुप्राणित होकर अनेक कहानियों की रचना की। वर्ग संघर्ष,शोषण सामाजिक एवं भौतिक रूढियों पर आक्रोश उनकी कहानियों के विषय रहे हैं। यशपाल की कहानियों के कई संग्रह प्रकाशित हुए हैं जिनमें प्रमुख है ---वह दुनिया, पिंजरे की उड़ान ,फूलों का कुर्ता, तर्क का तूफान और चक्कर क्लब। यशपाल जी के कथा शिल्प पर टिप्पणी करते हुए भगवत स्वरूप मिश्र ने लिखा है ।"कथा शिल्प और काव्य की दृष्टि से यशपाल जी प्रेमचंद्र के बहुत नजदीक हैं ,पर वे अपनी कहानी को प्रेमचंद की तरह समस्या का समाधान देने वाले किसी आदर्श विन्दू पर नहीं पहुंचाते ,अपितु यथार्थ की कठोरता के तीखे व्यंग का बोध भर करा देते हैं " रांगेय राघब ,नागार्जुन ,मन्मथनाथ गुप्त इसी परंपरा के अन्य कथाकार हैं ।मनोविश्लेषण वादी कहानी लेखको में अज्ञेय, इलाचंद्र जोशी एवं जैनेंद्र के नाम उल्लेखनीय हैं। व्यक्ति के परिवेश और संघर्ष को अपनी कहानियों में उकेरा है ।उनकी कहानियों में

मनोविश्लेषणात्मक प्रतीकात्मक एवं बौद्धिकता का प्रभाव है। अज्ञेय ने कहानी को बौद्धिक एवं वैचारिक आधार प्रदान किए तथा प्रतीकों एवं बिम्बों के प्रयोग में वृद्धि की। अज्ञेय की कुछ प्रसिद्ध कहानियों के नाम है-- रोज ,ख़ितींन बाबू, पुलिस की सिटी, हजामत का साबुन ,कोठरी की बात,ग्रेग्रीन, पठार का धीरज आदि उनके कई कहानियां संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। यथा विपथगा, परंपरा ,शरणार्थी ,कोठरी की बात ,जयदेल, अमर वल्लरी, और ये तेरे प्रतिरूप। जैनेंद्र की कहानियों में व्यक्त मनोविज्ञान के दर्शन होते हैं मानवीय दुर्बलताओं का यथार्थ चित्रण जैनेंद्र की कहानियों में प्रमुखता से हुआ है। वे प्रसाद की भांति आदर्श पात्रों को जन्म नहीं देते धरातल से उठाए गए पात्रों को अपनी कहानी का विषय बनाते हैं उनके पात्र अपने आस-पड़ोस से उठाए हुए मानव चरित्र हैं। उनकी कहानियों का शिल्पी अलग है क्योंकि कहानी की मूल संवेदना अपनी उष्णता के साथ उस में व्याप्त रहती है। उनकी प्रसिद्ध कहानियां जाह्नवी, एक रात, परख, मास्टर साहब, जो भी यात्रा, ग्रामोफोन का रिकॉर्ड ,पानवाला आदि है। मनोविश्लेषण वादी परंपरा

को गति प्रदान करने वाले एक अन्य कहानीकार इलाचंद्र जोशी जिनकी कहानियां मनोविज्ञान की दृष्टि से केस हिस्ट्री सी प्रतीत होती है। जोशी जी की कहानियों में दमित कामवासना एवं अहम कुंठा का चित्रण किया गया है। तथा इनमें घटनाओं की अपेक्षा चरित्र पर विशेष बल दिया गया है। उक्त विश्लेषण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि प्रेमचंदोत्तर तथा कहानीकारों में मनोविश्लेषण की प्रवृत्ति की प्रधानता है वर्ग संघर्ष एवं यथार्थवाद की ओर रुझान भी कुछ कहानी कारों का रहा। तथा उन्होंने प्रतीकात्मक था एवं सांकेतिकता का सहारा भी लिया है। इस काल में प्रेम रोमांस एवं यौन समस्याओं को भी कहानीकारों ने अपनी विषय वस्तु बनाया है युगीन परिवेश को पूर्णता व्यक्त करने में इस काल की कहानी ने महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया है। कहानी के शिल्प में भी इस काल में उत्तरोत्तर प्रगति की है। अब कहानी में घटना विरलता के साथ-साथ व्यक्ति चरित्र पर विशेष बल दिया जाने लगा।